P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-VII* March-2016

सूचना क्रान्ति और उसका भारतीय समाज पर प्रभाव

मीनाक्षी व्यास
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
समाजशास्त्र विभाग,
आर0 एस0 जी0 यू0 पी0 जी0
कालेज, पुखरायां,
कानपुर देहात

सारांश

सूचना क्रान्ति ईश्वर प्रदत्त वरदान नही है, यह मानव की विकासशील सोच की उपज है। यह वह तकनीकि है जो दुनिया के किसी भी व्यक्ति के साथ कही भी होने वाली घटना या प्रसंग के विषय में सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराती है। इसीलिये आज सूचना प्रौद्योगिक को मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का मूल आधार कहा जाता है। इसके बिना आधुनिक समाज की कल्पना भी नही की जा सकती है। इन्टरनेट का प्रारम्भ 1969 में अमेरिकी रक्षा विभाग द्वारा 'एडवांस्ड रिसर्च प्रोजेक्ट एजेन्सी नेट' के विकास के लिये किया गया। अगले बीस वर्षों तक इन्टरनेट का प्रयोग रक्षा और अनुसंधान तथा शिक्षा संस्थाओं में ही होता रहा। वर्ष 1989 में इंटरनेट को आम जनता के लिये खोल दिये जाने से इसका प्रयोग अन्य प्रयोजनों के लिये किया जाने लगा। तकनीकि स्वयं में अच्छी या बुरी नही होती है उसका प्रयोग उसे अच्छा या बुरा बनाता है। इसीलिये संचार साधनों का भी समाज पर नकारात्मक व सकारात्मक दोनों ही प्रभाव साथ–साथ पड़े।

मुख्य शब्द :आभासी दुनिया,उन्मुखता, आत्मकेन्द्रित, साइबर वुलिंग, महिमामण्डन

प्रस्तावना

संचार शब्द हमारी कल्पना में कुछ परिस्कृत यंत्रों एवं लेंस, माइक्रोफोन, दृश्य सामग्री, श्रव्य सामग्री, इलेक्ट्रानिक माध्यमों का बोध कराता है। संचार के नये तरीकों के विकसित होने से असीमित अवसर उपलब्ध हुये हैं। पहले सूचना और आकड़ों को कागजों या किसी अन्य तरीके से सुरक्षित किया जाता था, जिससे उन्हें रखने के लिये वृहतस्थान और पुनः प्रस्तुत करने में अनेक समस्यायें पैदा होती थी। साइबर सचार की शुरूआत से इन समस्याओं पर विजय प्राप्त कर ली गई है। अब स्थान और समय की कोई समस्या नही है। मानव एक प्रगतिशील प्राणी है, उसने अपनी सुविधा एवं विकास के लिये निरन्तर नये–नये आविष्कार किये। मनुष्य अपनी जिज्ञासु प्रकृति के कारण ही आदिम युग से निकलकर आज सूचना तकनीकि के युग में आ पहुॅचा। सूचना क्रान्ति ईश्वर प्रदत्त वरदान नही है, यह मानव की विकासशील सोच की उपज है। यह वह तकनीकि है जो दुनिया के किसी भी व्यक्ति के साथ कहीं भी होने वाली घटना या प्रसंग के विषय में सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराती है। इसीलिये आज सूचना प्रौद्योगिकी को मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का मूल आधार कहा जाता है।

उपकल्पना

संचार माध्यमों का समाज पर सकारात्मक प्रभाव के साथ ही नकारात्मक प्रभाव भी पड़ा है। सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को सूचना प्रौद्योगिकी ने अनेक नयी अवधारणाओं स जोड़ा है, जिसके कारण ग्रामीण सामाजिक परिवेश में भी परिवर्तन आ रहा है। अब गॉवों में निवास करने वाला व्यक्ति भी नेटवर्क से जुड़े समाज का हिस्सा बनता जा रहा है, और शहरी समाज में एक नयी अवधारणा का विकास हो रहा है। आज सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा अनेक सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का आदान–प्रदान हो रहा है। इस कारण समाज में काफी परिवर्तन हो रहे हैं। वर्तमान में सामाजिक मूल्य, परम्परायें, धार्मिक प्रतिबद्धता, रीति रिवाज और अन्य विशिष्टतायें, सांस्कृतिक मूल्यों में निरन्तर परिवर्तन इन्हीं संचार साधनों के माध्यम से हो रहा है। इलैक्ट्रानिक संसाधनों का उपयोग निरन्तर बढ़ रहा है। उपग्रह, सेल्यूलर फोन, फैक्स, टेली प्रिन्टर, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, ईमेल, वीडियो, पत्रकारिता, काम्पैक्ट डिस्क आदि सम्मिलित है।[1] इन संचार साधनों ने मानव समाज की एक आधारभूत स्थिति को परिवर्तित करके रख दिया है। हेपवार्थ और वाटसन ने संचार साधनों की उपयोगिता दर्शाते हुये कहा, ''सूचना प्रौद्योगिकी की नयी तकनीकि न केवल लोगों के आर्थिक जीवन को प्रभावित कर रही है अपितु यह उनमें सार्वजनिक प्रगति के प्रति भी उन्मुखता उत्पन्न करती है।''[2]

मोबाइल जो त्वरित सूचना पहुॅचाने का एक शक्तिशाली माध्यम है आज लोगों को जोड़ने के साथ ही तोड़ने का काम भी कर रहा है।

तथ्यों का संग्रह–द्वितीयक श्रोतो द्वारा सामग्री का संकलन किया गया है। विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। परिवार परामर्श केन्द्र, और पुलिस के सुलह समझौता कन्द्र की रिपोर्ट यह बताती है कि यहॉ दर्ज होने वाले कुल मामलों में 48 फीसदी विवाह के एक वर्ष के भीतर ही तलाक जैसे हालात में पहुॅच जाते हैं। सभी वर्गों के लोग इसमें शामिल होते हैं। पति पत्नी के बीच मोबाइल चेंटिग को लेकर उठने वाले विवाद उन्हें एक दूसरे से अलग ले जा रहे हैं। चेतना मिश्रा महिला काउन्सलर का कहना है कि पहले काम न करना, बड़ो की न सुनना या दहेज न देने के आरोप में झगड़ा होता था अब मोबाइल झगड़े का कारण बन गया है।[3]

दिल्ली पुलिस ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में अपराध के जो आकड़े दिये है वो चिंताजनक है, लेकिन इससे भी ज्यादा चिंताजनक वे आकड़े हैं जो समाज में पनप रही हिंसक प्रवृत्तियों से जुड़े हैं। आंकड़े बताते है कि अपराधियों में 94 प्रतिशत ऐसे है जिन्होंने पहली बार अपराध किया है और हत्या के 57 प्रतिशत अपराधियों की उम्र 25 वर्ष से कम है। इसका सीधा मतलब यही है कि इन सभी अभियुक्तों के जीवन का सबसे अधिक ऊर्जावान और उत्पादक समय जेल में या केस लड़ने में ही बीतेगा। आज आवश्यक हो गया कि ये सोचना चाहिये, वे कौन सी स्थितियॉ है या बच्चों को समाज में कैसा वातावरण मिल रहा है, जिससे वे किशारावस्था पार कर इतनी बड़ी संख्या में अपराधी बन रहे है? रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि लोगों को छोटी–छोटी बातों पर गुस्सा आ जाता है, और आवेश में चोट पहुॅचाने से लेकर हत्या तक को अंजाम दे दिया जाता है, लेकिन ये मामले तो तब सामने आये जब वे वारदात में बदल गये और जिन्हें कानून की नजर में अपराध माना गया। अखबारों की कतरनों से इसका अन्दाज मिल सकता है, कि किस तरह ढ़ाबे में खाना न मिलने के कारण किसी ने गोली चला दी, या कार टकराई इसलिये दूसरे व्यक्ति को गिराकर कार के नीचे ही कुचल दिया।

कुछ समय पूर्व दिल्ली के मैक्स हैल्थ केयर, मनोरोग विभाग के प्रमुख डा0 समीर पारिख ने इस पर एक सर्वेक्षण किया था। उनकी रिपोर्ट में कहा गया है कि हिंसात्मक फिल्में देखने के कारण बच्चों में हथियार रखने की प्रवृति बढ़ी है। रिर्पोट बताती है कि 14 से 17 साल के किशोर हिंसात्मक फिल्में देखने के शौकीन हो गये हैं। यह सर्वेक्षण किशोरों के मानसिक दृष्टिकोण पर आधारित है। बच्चों में आपराधिक प्रवृत्तियों लिये एक तो उनके साथ किया गया क्रूर तथा उपेक्षापूर्ण व्यवहार जिम्मेदार है, दूसरी तरफ मीडिया द्वारा बुरी बातों का महिमामण्डन करना भी उन्हें प्रेरित करता है।[4] कडकडडूमा अदालत में चार लड़कों ने जज के सामने ही एक कैदी पर गोलियॉ बरसाई, जिसमें एक हवलदार की मौके पर ही मौत हो गई। सभी बच्चे नाबालिग थे और उनके पास से दो कट्टे और दो पिस्तौल बरामद की गई। इन्हें पैसा देकर ये काम करवाया गया था।[5]

रिसर्च पेपर लाइव लेक्चर्स आदि सर्च करने के लिये उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षार्थियों को मुफ्त इन्टरनेट की सुविधा दी जाती है। उसका सदुपयोग तो कम परन्तु दुरूपयोग बहुत हो रहा है। इंटरनेट गेटवे से एक खुलासा किया गया कि 99 फीसदी छात्रों ने पोर्न साइट और अश्लील साहित्य सर्च किया है, इससे संचार कम्पनियॉ और शैक्षणिक संस्थान हतप्रभ रहे गये। छात्र एजूकेशनल साइट्स का कम, पोर्न साइट्स और सोशल साइट्स का ज्यादा प्रयोग कर रहे हैं।[6] अब बच्चे अपना अधिकांश समय आनलाइन होकर गुजारते है, इसलिये पिछले कुछ सालों में साइबर बुलिंग अर्थात् साइबर दादागिरी के अधिक विवाद हो रहे हैं। यह एक ऐसी टर्म बन चुकी है जिससे अध्यापक और माता–पिता भी बहुत परेशान हैं। मुंबई आधारित काउसलिंग सेंटर माइंड टेम्पल की मनोचिकित्सक डाक्टर अंजलि छाबड़िया कहती है, 'साइबर बुलिंग का शिकार वे बच्चे होते है, जिन तक पहुॅच बनाना आसान होता है। इन्हें व्यंगात्मक संदेश, आलोचना करते इमेल्स, अपमान करती पोस्ट, निजी तस्वीरों के माध्यम से बुलिंग का शिकार बनाया जाता है। ये बच्चे घबराहट, तनाव, डर, अकेलापन, आत्मसम्मान में कमी की गिरफ्त में आ जाते हैं।'' बुलिंग से पीड़ित बच्चा स्कूल नही जाना चाहता। पढ़ाई में पिछड़ने लगता है, वह नशे की ओर जा सकता है, ड्रग्स ले सकता है, या फिर खुद को नुकसान पहुॅचा सकता है। दूसरी ओर अभिभावकों को ऐसी स्थिति में समझ नही आता कि वे क्या करें?[7]

कानपुर में कान्वेंट स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़ने वाले छात्र ने पर्स लूटा व उससे प्राप्त मोबाइल को 'ओलेक्स' में बेचते समय पकड़ा गया। इस लूट में तीन नाबालिग बच्चे और शामिल थे।[8] सहेलियों ने ही छात्रा का रेप कराया और वीडियो बनाकर इंटरनेट पर डाल दिया।[9] डा0एल0के0 सिंह, मण्डलीय मनोवैज्ञानिक के अनुसार ''आज परिवारों की जीवन शैली बदल रही है, इससे पूरा परिवार प्रभावित है। सच तो यह है बहुत से अभिभावकों को बच्चों को पालना ही नही आता है। जब तक माता–पिता कुछ समझ पाते है, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।'' प्रियंका गुप्ता, चाइल्ड काउन्सलर के अनुसार, किशोरावस्था में बच्चे पहले से ज्यादा एग्रेसिव होते हैं। इसकी वजह इन्टरनेट व मोबाइल भी है बच्चों की इन दिक्कतों के लिये माता–पिता भी कम जिम्मेदार नही होते।''[10]

बच्चों पर आधुनिक समय में इतना व्यापक असर पड़ा है कि सुप्रीम कोर्ट तक को हस्तक्षेप करना पड़ा है। सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि – कानून, टेक्नोलॉजी और प्रशासन के समन्वय से इन्टरनेट के दुष्परिणाम से बचने का तरीका ढूढ़ा जाना चाहिये। जैसे–जैसे टेक्नोलॉजी का विस्तार हो रहा है और वह बेहतर होती जा रही है वैसे–वैसे पोनोग्राफी की पहुँच भी बढ़ती जा रही है।

जब संचार के विविध साधन नही थे, तब व्यक्ति आपस में जुड़े रहते थे, क्योंकि कोई भी व्यक्ति अकेला नही जी सकता है। उत्सव, तीज–त्यौहार, जन्मदिवस व मृत्यु के शोक में एक–दूसरे के सुख–दुख में शामिल होते थे। जिससे जीवन म अकेलापन और उससे जन्म लेने वाला अवसाद जन्मता ही नही था, लेकिन जब से व्यक्ति सूचनाओं के ढ़ेर में रहने लगा, आभासी दुनिया को ही वास्तविक समझने लगा तो वास्तविकता में वह अकेला पड़ गया। फेसबुक, व्हाट्सअप में ढेरो दोस्त और आवश्यकता पड़ने पर एक भी नहीं मिलने पर उसे तनाव घेरने लगा

धीरे–धीरे उसमें इतनी कुण्ठा और निराशा पनपने लगी कि आत्महत्या की ओर अग्रसर होने लगे। मनोवैज्ञानिक डा0एन0के0 सक्सेना ने कहा था कि अमेरिका की तरह भारत में भी आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ी है। इसके पीछे मुख्य कारण समाजीकरण से प्रतिरोधक क्षमता में कमी आना है। नई पीढ़ी में कुंठा से निपटने की क्षमता घटी है।

अमेरिका में यूनिवर्सिटी आफ मैरी लैंड 'के इटरनेशनल सेंटर फार मीडिया एंड द पब्लिक एजेंडा' के एक अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष निकल कर आया था कि जिन छात्रों को 24 घंटें के लिये इंटरनेट से दूर रखा गया, उनके दिन की शुरूआत तो बहुत अच्छी हुई, लेकिन दोपहर होने तक उनमें से अधिकतर लोग इंटरनेट पर वापसी के लिये बैचेन होने लगे उन्हें लगने लगा कि वे बिल्कुल अकेले हो गये हैं। युवा वर्ग में इंटरनेट के प्रति बढ़ती छटपटाहट को मनोवैज्ञानिकों ने 'इंटरनेट एडिक्शन डिसआर्डर' नाम दिया है, जो कि एक तरह की बीमारी है। वर्ल्ड वाइड वेब पर बने रहने का यह नशा युवाओं को आत्मकेन्द्रित कर रहा है, और उनकी सामाजिक गतिविधियों में बहुत तेजी से गिरावट आ रही है।[11] बच्चों की रचनात्मकता और सृजनशीलता पर भी असर पड़ रहा है।

निष्कर्ष

ऐसा नही है कि इस सूचना क्रान्ति का केवल नकरात्मक पक्ष ही है। आज इसके बिना आधुनिक समाज की कल्पना भी नही की जा सकती है। इन्टरनेट का प्रारम्भ 1969 में अमेरिकी रक्षा विभाग द्वारा 'एडवांस्ड रिसर्च प्रोजेक्ट एजेन्सी नेट' के विकास के लिये किया गया था। अगले बीस वर्षों तक इन्टरनेट का प्रयोग रक्षा और अनुसंधान तथा शिक्षा संस्थाओं में ही होता रहा। वर्ष 1989 में इंटरनेट को आम जनता के लिये खोल दिये जाने से इसका प्रयोग अन्य प्रयोजनों के लिये किया जाने लगा। वर्ष 1990 में टिम बर्नर ली द्वारा ''वर्ल्ड वाइड वेब'' के अविष्कार ने इंटरनेट को नये आयाम प्रदान किये। वर्तमान में इंटरनेट पर जो प्रमुख सुविधायें उपलब्ध है, वे है वर्ल्ड वाइड वेब, इलेक्ट्रानिक मेल, सोशल नेटवर्किंग साइट, वायस ओवर इण्टरनेट प्रोटोकाल, इंटरनेट प्रोटोकाल टी0वी0 ई–कामर्स, चेंटिग, वीडियो कान्फ्रेसिंग तथा आनलाइन शापिंग।[12] सोशल नेटवर्किंग 'रियल टाइम एलोकेशन बेस्ट' तथा 'लाइव फीड' पर आधारित है, अतः इसमें सजीवता भी है। व्यापार की दुनिया में भी इसने काफी परिवर्तन कर दिया है, क्योंकि विज्ञापन के परम्परागत माध्यमों के मुकाबले सोशल मीडिया कही अधिक प्रभावी साबित हो रहा है। इससे बिक्री में बढ़ोत्तरी होती है, साथ ही इसके माध्यम से प्रतिस्पर्धा कम्पनियों की खूबियों और कमियों का भी पता लगाया जाता है। उत्पादन कर्ता अपने प्रोडक्ट्स के बारे में और उपभोगकर्ता की मानसिकता के बारे में जानकर आगे बढ़त रहते हैं। बड़ी कम्पनियों के लिये ही नहीं, सोशल मीडिया लघु और मध्यम श्रेणी के उद्योगों के लिये, सभी वर्गों के लोगों के लिये लाभप्रद साबित हो रहा है। किसी भी विचार को लोगों तक पहुँचाने के लिये कुछ ही सेकेण्डस चाहिये होते हैं। शिक्षा, व्यापार, चिकित्सा अभिव्यक्ति या जनजीवन से जुड़े कार्यों या मुद्दों में ही यह प्रणाली सहायक नही है बल्कि अत्यन्त संवेदनशील मुद्दो पर भी इसके सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे है। मौत से जूझते, हनुमंत थप्पा को लेकर देश का एक तरह से सोचना इसका एक उदाहरण मात्र है।

तकनीकि स्वयं में अच्छी या बुरी नही होती है, उसका इस्तेमाल उसे अच्छा या बुरा बनाता है। दुष्प्रयोग के कारण किसी चीज का उपयोग बन्द नही किया जा सकता है। ट्रेनों के एक्सीडेंट हो जाने से क्या ट्रेनों को बन्द कर दिया गया। इस पर रोक लगाना भी सही नही है, बस इस पर दृष्टि रखनी होगी। भारतीय समाज की अपनी सभ्यता और संस्कृति में वे सारे तत्व है, जो किसी भी तरह के झंझावत से अपनी रक्षा कर सके। बचपन में एक निबंध बहुत याद किया जाता था, 'विज्ञान अभिशाप है या वरदान' कभी–भी उसे अभिशाप नही कहा गया क्योंकि यदि ऐसा होता तो आज हम दूसरे ग्रहों में जीवन की खोज न कर रहे होते, अतः सूचनाओं, तथ्यों को जानते हुये आगे बढ़ना, सही समय पर सही निर्णय लेना हमें पहले सीखना होगा। यदि जीवन के प्रारम्भिक काल में बच्चों का सही ढ़ग से पालन पोषण होता रहे तो शायद कभी भी हमें संचार माध्यम के दुष्परिणाम नही देखने पड़ेगे, और ये प्रक्रिया सतत चलती रहनी चाहिये।

सन्दर्भ सूची

1. सूचना, संचार प्रौद्योगिकी की आवश्यकता – ललित चन्द्र जोशी– राधा कमल मुखर्जी चिन्तन परम्परा। पृ0 122–2014
2. इन्फारमेशन टेक्नोलाजी एण्ड दि स्पटियल डायनामिक्स ऑफ कैपीटल– हेपवार्थ मार्क ई0 वाटसननियेल– 1988 पृ0–123
3. दरक रहे रिश्ते बिखर रहे परिवार – सर्वेश मिश्रा – दैनिक हिन्दुस्तान – 10 अक्टूबर 2014
4. क्यों हिसंक हो रहे हैं बच्चे– अजलि सिहां – दैनिक जागरण – मार्च – 2015
5. नाबालिग ने कोर्ट में कत्ल किया– हिन्दुस्तान –24, दि0 2015
6. सर्च करते या पोर्न सर्च – अमित मिश्र – हिन्दुस्तान 24 दि0 2015
7. साइबर दादागिरी – डाक्टर अंजलि छाबड़िया – मनोचिकित्सक – हिन्दुस्तान 05 नव0 2015
8. ऑठवीं का छात्र निकला मोबाइल लुटेरा – हिन्दुस्तान – 25 दि0 2015
9. असुरक्षित महिलायें – हिन्दुस्थान बरेली संस्करण – 26 अगस्त, 2015
10. माता पिता को पसन्द नही करते 41 प्रतिशत बच्चे– राजीव त्रिवेदी– हिन्दुस्तान –7 अगस्त, 2014
11. इंटरनेट पर बढ़ती निर्भरता – हिन्दी निबन्ध–अजामिल– साहित्यकार, संस्कृति कर्मी एवं वरिष्ठ पत्रकार पृष्ठ–49
12. वर्तमान परिवेश में इण्टरनेट का महत्व – परीक्षा मन्थन् 2015 भाग –2 पृष्ठ 93

Dear Author
Please Provide Aim of the Study & Review of Literature for this Paper .